

00:00:06 - 00:02:44

[संगीत] [संगीत] आए हुए सभी पुण्य आत्माओं को मेरा नमस्कार आज हम महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर एकत्रित हुए हैं महाशिवरात्रि का पर्व आत्माओं का पर्व कहलाता है आत्माओं का पर्व से मेरा आशय सभी लोग शरीर भाव से परे आत्मिक भाव पर रहकर परमात्मा की आराधना करते हैं तो इसलिए हम भी अगर आत्मिक स्तर पर जाकर के इस पर्व में शामिल हो तो इस पर्व का पूरा आनंद पूर्व पूर्ण सामूहिक के साथ हम ग्रहण कर सकते हैं और महाशिवरात्रि का पर्व के साथ-साथ गहन ध्यान अनुष्ठान का भी आज समापन है घन ध्यान अनुष्ठान जो पिछले 45 दिनों से चल रहा था

00:02:01 - 00:04:15

और इस अनुष्ठान की विशेषता यह है कि अनुष्ठान भी सूक्ष्म स्तर पर होते रहता है यानी सूक्ष्म स्तर पर गुरु अपने साधकों के साथ संपर्क में रहते हैं उसका अनुभव साधकों को भी आया है कई साधकों को सूक्ष्म शरीर का अनुभव आया है आया है यानी सूक्ष्म शरीर दिखा है ऐसा नहीं सूक्ष्म शरीर का आवाज आई ऐसा भी नहीं क्या हुआ है जब वो ध्यान में बैठे थे और जब कोई इच्छा करके नहीं बैठे थे कोई अपेक्षा करके नहीं बैठे थे सिर्फ अनायासे बैठे थे तो आना ऐसी एक हल्की सी खुशबू उनको ध्यान में महसूस हुई उन्हें लगा खुशबू का कोई झोका आया है

00:03:13 - 00:05:37

और वह खुशबू कौन सी थी किस फूल की थी किस इत्र की थी ऐसा वर्णित नहीं किया जा सकता लेकिन वो धीरे-धीरे खुशबू बढ़ती गई बढ़ती गई बढ़ती गई और बाद में खुशबू के अत्यधिक पास में आने के बाद साधक का शरीर भावही छूट गया शरीर भाव छूट गया और उसके बाद में एक ऐसी समाधि की अवस्था समाधि की स्थिति लग गई कि इसका वर्णन नहीं किया जा सकता तो कहने का अर्थ सूक्ष्म शरीर के माध्यम से कई साधकों को इस बार ध्यान का बहुत अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ है गहन ध्यान अनुष्ठान वास्तव में 45 दिन में अपने भीतर के में को अपने भीतर के अहंकार को समाप्त करने का

00:04:25 - 00:06:00

सुअवसर है अपने को जो लगता है ना मेरे बिना नहीं हो सकता मैं नहीं गया ऑफिस तो नहीं हो सकता मैंने व्यवसाय नहीं संभाला तो नहीं संभल सकता इस में से बाहर निकलने का अवसर था 42 दिन में आपने अनुभव किया होगा आप ऑफिस नहीं गए तो भी ऑफिस चला आप मित्रों को नहीं मिले तो भी कुछ फर्क नहीं पड़ा माने आपके रहने नहीं रहने से कोई अंतर ही नहीं आया दुनिया जैसी थी वैसे ही चल रही है आज 4 दिन बाद भी आप देखोगे कुछ भी रुका नहीं है कुछ भी अटका नहीं है माने हम बेकार में अपना अहंकार पाल के बैठते हैं कि अगर हम नहीं रहे तो क्या होगा कुछ नहीं फर्क

00:05:12 - 00:07:25

पड़ने वाला है तो अपना ईगो अपना अहंकार अपना मैं कम करने का ये एक अवसर था एक समझ लो ना एक प्रकार का आत्मिक सन्यासी था कि 45 दिन सब दुनियादारी से सब ड्यूटी से मैं से एकदम विमुक्त हो गए और अपने आप को जाना अपने अस्तित्व को पहचाना अपने भीतर अपने आप को जाना अपनी कितनी आध्यात्मिक प्रगति हुई यह देखा कितनी बाकी है वह देखा क्या करना बाकी है वह देखा यह सब कुछ आपको देखने का अवसर यह अनुष्ठान था और और ये अनुष्ठान खूब विशेष अनुष्ठान था इस अनुष्ठान में कई पुण्य आत्माओं ने अपने शरीर को छोड़ा है छोड़ा है कहना भी ठीक नहीं छूट गए हैं क्यों जिनका आत्मिक

00:06:19 - 00:07:58

भाव खूब बढ़ गया है आत्मा का भाव ज्यादा बढ़ गया तो ऑटोमेटिक शरीर भाव रहा ही नहीं तो शरीर की पकड़ ही कमजोर हो गई शरीर की पकड़ वीक हो गई उसके बाद में एक अच्छा सब में से मुक्त हो गए अपने कर्मों में से मुक्त हो गए अपने रिश्तों में से मुक्त हो गए अपने दुनियादारी से मुक्त हो गए अपने संसार से मुक्त हो गए अपने शरीर से भी मुक्त हो गए तो ऑटोमेटिक शरीर छूट गया और यह इस बार का नहीं कि मेरा पिछले 17 साल का अनुभव है जब भी गहन ध्यान अनुष्ठान होता है ना जो आत्मा है आत्मिक स्तर के ऊपर जीती रहती है जिनका शरीर भाव नहीं के बराबर रहता है उन लोगों का

00:07:08 - 00:08:37

ऑटोमेटिक शरीर छूट जाता है यह क्या प्रकार है यह प्रकार ये कि जैसे आप पंढरपुर की यात्रा में जा रहे हो भले ही आप जाप राम राम करते हो लेकिन जैसे ही आप उस यात्रा में शामिल होंगे ना सब लोग विट्ठल विट्ठल कर रहे ऑटोमेटिक नाया से आपके मुंह से विट्ठल विट्ठल निकलेगा ठीक उसी प्रकार से प्रकार है कि जैसे ही आप इस गन ध्यान अनुष्ठान में शामिल हो जाते हैं तो यहां पर आत्माओं की सामूहिक है और आत्माओं की सामूहिक के कारण आत्मिक भाव इतना अधिक बढ़ जाता है इतना अधिक बढ़ जाता है कि सब कुछ जीवन में पा लिया सब कुछ जीवन में कर लिया अब करने के

00:07:53 - 00:09:40

लिए कुछ बाकी नहीं रहा और कोई शरीर भाव भी बाकी नहीं रहा कुछ करने की इच्छा भी बाकी नहीं रही कोई कर्म बाकी नहीं रहे ऐसा जब फील होता है ना तो ऑटोमेटिक शरीर छूट जाता है तो कई पुण्य आत्माओं का शरीर इस गन ध्यान अनुष्ठान में छूटा है और यह हर दफे का ही है बारबार का ही है इस बार का ऐसा नहीं तो आवश्यकता है आपने इस गन ज्ञान अनुष्ठान का कितना लाभ लिया कितना फायदा लिया वैसे ना जब भी कभी हम आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हैं आध्यात्मिक स्तर पर चलते हैं तो सारा विरोध अपने को अपने शरीर का विरोध सहन करना पड़ता है अपने विचारों का विरोध सहन करना पड़ता

00:08:47 - 00:10:39

है अपने परिवार का विरोध सहन करना पड़ता है यानी इस मार्ग में चलना खूब कठिन है क्यों क्योंकि शुरू से एक धारणा बनी है शुरू से एक धारणा बनी हुई है कि ध्यान करना मेडिटेशन करना आध्यात्मिक मार्ग पर चलना यह केवल साधुओं के कार्य सन्यासियों के कार्य है सामान्य गृहस्थ सामान्य व्यक्ति इस मार्ग पर नहीं चल सकता नहीं चलना चाहिए इसी धारणा को तोड़ने के लिए मेरे गुरु ने मुझे समाज में भेजा है मैं आपके जैसा ही एक सामान्य मनुष्य हूं उन्होंने जानबूझ के एक सामान्य मनुष्य का चुनाव इसलिए किया एक सामान्य गृहस्थ का चुनाव इसलिए

00:09:42 - 00:11:43

किया कि वह कहते हैं कि सारा दुनिया सारा जगत साधु सन्यासी नहीं है हमारी इच्छा है कि यह अनुभूति का ज्ञान यह अनुभूति का नॉलेज दुनिया के प्रत्येक मनुष्य तक पहुंचे और यह तब पहुंचेगा जब दुनिया में रहने वाले सामान्य मनुष्य इसका माध्यम बनेगा इसलिए सामान्य मनुष्य को इसका माध्यम बनाए और रही बात य मेरे वस्त्रों की तो एक बार मैंने रामकृष्ण मिशन में कार्यक्रम दिया आठ दिन का पूरा शिविर हुआ शिविर के पश्चात जो स्वामी थे ना मठाधीश व उम्मे के थे उनको मैंने कहा इस शिविर के अंदर आपको कुछ कमो लग रही है क्या आपके कुछ सुझाव हैं क्या आपको यह

00:10:44 - 00:12:37

कैसा लगा तो उन्होंने कहा शिविर तो बहुत अच्छा है लेकिन आपका ना माल अच्छा है आपका पैकिंग खराब है आपना आध्यात्मिक चर्चा कर रहे हो आध्यात्मिक मार्गदर्शन कर रहे हो तो आध्यात्मिक मार्गदर्शन जैसा आपका वेशभूषा होनी चाहिए ना आप एक लुंगी पहन के आप एक कुर्ता पहन कर के कार्यक्रम दे रहे तो यह उसके अनुरूप नहीं है यह अनुरूप तब होगा जब आप उसके अनुरूप कपड़े पहनो ग तो मैंने उनको बताया कि कार्यक्रम के बाद अनुभूति के बाद वैसे ही लोग मेरी बात मानते हैं मेरा सम्मान करते हैं तो बेकार में खूब अंतर मुझे उनमें और मेरे में नहीं

00:11:40 - 00:13:07

रखने का है होता क्या है जैसे एक छोटा बच्चा है छोटे बच्चे को अपन एक स्टेप या दो स्टेप पर बैठ के बोलो ना चढ़ जा चढ़ जा चढ़ जा तो बच्चा चढ़ने की कोशिश करेगा और अगर अगर हम खूब 20 पाने ऊपर बैठे हैं और उसको बोले चढ़ जा चढ़ जा तो चढ़ने का कोशिश ही नहीं करेगा चढ़ने का प्रयत्न नहीं करेगा ठीक ऐसी स्थिति है मैं नहीं चाहता हूं कि कोई मुझे बड़ा समझे कोई मुझे विशेष समझे मैं चाहता हूं लोग मुझे अपने जैसा ही समझे तब जाकर के वह मेरे जैसा बनने का कोशिश करेंगे प्रयत्न करेंगे और मैं भी बन सकता हूं यह विश्वास उनमें जागृत

00:12:25 - 00:13:58

होगा तो मेरा उद्देश्य है उनके अंदर वो विश्वास जागृत करना कि वो भी ऐसा कर सकते हैं उनको भी स्थिति प्राप्त हो सकती है उनकी भी आध्यात्मिक प्रगति हो सकती है तो उन्होंने तर्क दिया एक संस्कृत समाचार वाचक है वह अगर सूट टाय पहन करके अगर समाचार देगा तो कैसा लगेगा अच्छा नहीं लगेगा क्योंकि जो वार्ता कर रहा है जो समाचार दे रहा है जो भाषा में दे रहा है उस भाषा के अनुरूप उसके कपड़े नहीं हैं उसकी वेशभूषा नहीं है तो वेशभूषा का खूब ज्यादा अंतर पड़ता है आप क्या बोल रहे हो वह बाद में होता है आप क्या दिख रहे हो आपका देखने

00:13:11 - 00:14:50

का प्रकार कैसा है दिखने आप कैसे दिख रहे हो उसके ऊपर बहुत कुछ निर्भर रहता है तो लोग आपको देखते हैं पहले तो इसलिए पहरावा उसके अनुरूप होना चाहिए भले आपको यह पसंद नहीं हो लेकिन मेरी इच्छा है कि आप ऐसे कपड़े पहन करके फिर आपके कार्यक्रम दे प्रोग्राम दे तो ज्यादा अच्छा होगा कहने का अर्थ मैं आपके जैसा ही एक सामान्य मनुष्य हो और एक सामान्य मनुष्य को माध्यम बना कर के गुरुओं ने दिया है आप बोलोगे आप गए और शिव बाबा ने आपको अनुभूति कराई और आपकी तीन दिन समाधि लग गई हमारी तो नहीं लगती अरे बाबा जो उन्होंने अनुभूति कराई

00:14:01 - 00:15:33

जो उन्होंने अनुभव कराया वही की वही अनुभूति वही का वही अनुभव आपको हो रहा है सेम है इसमें और उसमें कोई अंतर नहीं है अनुभूति समान है आपके अनुभूति और मेरे अनुभूति में कोई अंतर नहीं है और जो प्रभाव का अंतर दिख रहा है ना वह अंतर है मैं कई सालों से प्यासा था कई सालों से खोज रहा था कई सालों से दूढ़ रहा था और उस प्यास के कारण होता है ना जैसे एक पानी का गिलास है जिसको प्यास लगी है उसको जो कीमत है वो कीमत जिसको प्यास नहीं लगी उसको नहीं रहती ना तो उस प्रकार से आपके अंदर प्यास की कमी है अगर प्यास भी मेरे जैसे हो तो आपको भी वही

00:14:46 - 00:16:34

इफेक्ट आएगा वैसी समाधि लगेगी प्रश्न यह है कि आपके अंदर प्यास कितनी है प्यास जगना अत्यंत आवश्यक है दूसरा गुरु को वो मनुष्य है यह जाना ऐसा देखा ना मेरे भी दो हाथ हैं उसके भी दो हात हैं मेरे भी दो पैर माने वोह मनुष्य ही है मनुष्य है यह देखा लेकिन देखा किससे आंख से देह से देखा यह भी सामान्य मेरे जैसा देह है लेकिन केवल देह देखा नहीं देह के भीतर जो आत्मा है उस आत्मा के ऊपर एकाग्रता की कि इस देह के अंदर कौन सी आत्मा है जिके अंदर से मुझे परम चैतन्य की अनुभूति हो रही है मेरी परमात्मा की खोज खत्म हो रही है मुझे परमात्मा मिल गया य

00:15:41 - 00:17:28

अनुभूति हो रही है सारा चित्त उसके ऊपर रखा यानी उसको परमात्मा माना शुद्ध आत्मा माना और जब परमात्मा माना तो क्या हुआ एक साथ कई सारी घटनाएं घटित हो गई एक तो मुझे परमात्मा मिल गया मुझे परमेश्वर मिल गया यह अनुभूति हुई तो परमात्मा की खोज खत्म हो गई दूसरा जीवन की सबसे बड़ा समाधान मुझे परमेश्वर मिल गया मुझे परमात्मा मिल गया यह है जब वह मिल जाता है ना तो हमारा चित्त अंतर्मुखी हो जाता है हमको कुछ भी पाने की खोजने की मिलने की कोई इच्छा ही बाकी नहीं कोई अपेक्षा बाकी नहीं र थी तो इस मार्ग में मैं कोई अपेक्षा लेकर

00:16:36 - 00:18:19

के नहीं आया था इसलिए जैसे व अनुभूति हुई ना तो समाधि लग गई और दूसरा गुरु को भगवान मत मानो भगवान मानो भगवान समझो मत व भगवान नहीं है कोई भी भगवान नहीं है क्यों प्रत्येक कोई शरीर परमात्मा हो ही नहीं सकता इसलिए यह बात को ध्यान रखो कि गुरु भी परमात्मा नहीं है गुरु परमात्मा का माध्यम है लेकिन हमको हमारी गुण ग्राहक को चरम सीमा पर लेकर जाने का है हमको हमारी चरम सीमा पर गुण राता को तब ले आ सकेंगे जब हम उसको परमात्मा मानेंगे लेकिन साथ साथ यह भी ध्यान रखने का कि कोई शरीर परमात्मा नहीं हो सकता ऐसा जब हम सोचेंगे ना तब जाके हमारा

00:17:28 - 00:19:06

चित्त गुरु के शरीर पर नहीं गुरु के भीतर की आत्मा के ऊपर जाएगा और जब आत्मा के ऊपर जाएगा ना तो हम उस परम चैतन्य को ग्रहण कर सकेंगे जो उसके भीतर से बहर है वह एक माध्यम है वह एक पाइप है हम ना पाइप को महत्व देते हैं पानी को महत्व नहीं देते उल्टा है पानी को महत्व देना चाहिए पाइप को नहीं पाइप का क्या महत्व है और पाइप में कोई ना कोई दोष होंगे ना कपड़े का पाइप होगा तो फटे दोहे का पाइप होगा तो जंग लगेगी प्लास्टिक का पाइप होगा तो टूटेगा यानी प्लास्टिक के और कपड़े के दोष उसमें आ सकते हैं जिससे व बना है लेकिन भीतर से बहने वाला पानी व

00:18:17 - 00:20:02

प्लास्टिक का हो तो भी उतना ही शुद्ध है कपड़े का हो तो भी उतना ही शुद्ध है अन्य किसी धातु का हो तो भी उतना ही शुद्ध है तो कहने का अर्थ मेरे और आप में कोई अंतर नहीं है और मैं एक अंतर महसूस करता हूं कि आप लोग ना जैसे होता है ना कंप्यूटर में पुरानी फाइलें हम डिलीट करते हैं तब जाके नई फाइलें डालने के लिए जगह बनती है लेकिन हम हमारे भूतकाल को छोड़ना ही नहीं चाहते आप देखो आपने भूतकाल को कितना छोड़ा है भूतकाल की बातें भूतकाल की घटनाएं इतनी भरी पड़ी है कि कई दिनों से ध्यान करके भी ध्यान करने जैसे ही बैठते हैं वैसे ही वह पुरानी पुरानी बातें

00:19:13 - 00:20:46

आना चालू हो जाती है लेकिन वो खत्म भी नहीं हो रही ना आना चाहिए लेकिन वह जाने के लिए जैसे एखादी पुरानी घटना ध्यान में याद आ गई तो वह चली जाना चाहिए बाद में फिर से वो याद नहीं आना चाहिए मेरे को भी नहीं आता ऐसा नहीं आती है लेकिन आके व चली फिर नहीं आती है म मेरे अनुभव य कि जो भूतकाल की घटना है ना जब ध्यान करने बैठे आई थी लेकिन आने के बाद में फिर दोबारा नहीं चली गई माने जाती है वो आपके इसमें अंतर क्या देख रहा हूं वह जाती नहीं है एक ही बार बारबार बार बार बार बार वही घटनाए क्यों आ रही है वो नहीं आना चाहिए तब जाके भूत क्लियर होगा और जब

00:20:01 - 00:21:48

तक भूतकाल क्लियर नहीं होगा तब तक आप वर्तमान काल में नहीं आ सकते और जब तक वर्तमान काल में नहीं आएंगे ध्यान नहीं लग सकता आपकी समस्या है कि भूतकाल में से वर्तमान काल में ही नहीं आ पा र तो विशेषता है आपको भूतकाल को छोड़ना पड़ेगा आप देखो ना एक छोटा सा बीज जब अंकुरित होता है ना तो बीज अपने खोल को छोड़ देता है छोटा सा बीज लेकिन उसके अंदर बीज का तत्व और छोटा लेकिन वह जब बीज हम जमीन में रखते तो बीज के ऊपर एक बड़े-बड़े पत्थर पड़े रहते हैं वह पत्थर से झगड़ नहीं है व पथर पथ से लड़ता नहीं है यानी वो जानता है कि मेरी

00:21:03 - 00:22:36

ऊर्जा शक्ति बहुत छोटी है यह पत्थर बहुत शक्तिशाली है बड़े बड़े हैं मैं उनसे झगड़ नहीं सकता मैं उनसे लड़ नहीं सकता फिर वह क्या करता है उन्हीं पत्थरों के पास से धीरे धीरे धीरे धीरे धीरे धीरे रास्ता बनाता है उनसे झगड़ नहीं है उनसे लड़ता नहीं है धीरे धीरे धीरे धीरे होता एक बहुत बड़ा वृक्ष बन जाता है जबकि जब वो वृद्धि होते रहते हैं तब कई बकरियां उसकी पत्ते नोचने के लिए आती हैं पत्ते खाने के लिए आती हैं उसके बावजूद भी उसका जो लक्ष्य है उगाम होने का ऊपर जाने का वह तो बना ही रहता है ठीक इसी प्रकार से आप भी जब अनुभूति का ज्ञान प्राप्त करो

00:21:50 - 00:23:36

तो ज्ञान का ऊर्जा खूब छोटी सी है उस ऊर्जा को अपने जीवन की रोज मर्या की समस्याओं को समाप्त करने में खर्च मत करो उनको छोड़ दो जैसी वैसे पड़े रहने दो और बीज से आप वृक्ष बन जाओ जब आप वृक्ष बन जाएंगे तो आप देखेंगे जो पत्थर आपके मार्ग में आपके रास्ते में आड़े आ रहे थे वो बड़े नहीं हुए वो पत्थर उतने के उतने रह गए आप वृक्ष हो गए हैं और जो बकरियां आपके पत्ते नोचने के लिए आपके जीवन में आती थी वो बकरियां आज आपकी छाया में आकर बैठी हैं दूसरे आपने देखा कि नहीं पता नहीं बीज की प्रगति बीच का प्रोग्रेस जब अंकुरित होता है यानी जब व

00:22:44 - 00:24:11

अपना भूतकाल छोड़ता है ज अपने खोल उतारता है तब जाकर के वह अंकुरित होता है और ज अंकुर होता है फिर व धीरे धीरे धीरे धीरे ऊपर की ओर जाता है और वोह जितना ऊपर की ओर जाता है उतना ही वह भीतर भी प्रगति करते रहता है लेकिन हमको वो जमीन के नीचे क्या प्रगति कर रहा है उसकी जड़े कितनी जबी जा रही है उसकी जड़ कितनी मोटी हो रही है वह हमको नहीं दिखता लेकिन हमको क्या दिखता है ऊपर की प्रगति बीज अंकुरित हुआ अंकुरित से चार पत्ते फूटे चार पत्ते से फिर और पत्ते फूटे फिर एक छोटा सा पौधा हुआ पौधे से फिर एक वृक्ष हुआ फिर एक बहुत बड़ा वृक्ष हो

00:23:28 - 00:25:02

गया यह सब हमको दिखता है और क्या नहीं दिखता नीचे उसकी जड़े कितनी लंबी हुई उसकी जड़े कितनी फैली कई बार वृक्ष पहले जड़े फैलाते हैं कई किसानों को कई बागवान को य अनुभव आया होगा कई वृक्ष ऐसे हैं जो वृक्ष लगाने के बाद में बढ़ते ही नहीं चार पाच साल बढ़ेंगे नहीं वो उतने के उतने रहेंगे उनकी ऊपर की प्रगति खूब धीमे होती है और उसके बाद में लेकिन नीचे उनकी प्रगति खूब होती रहती है धीरे धीरे धीरे धीरे धीरे धीरे करते करते सि नीचे भी जाते हैं और फैलते भी जाते हैं दोनों प्रगति उनकी होती रहती है और जड़े पूरी मजबूत हो जाने के बाद में

00:24:15 - 00:25:53

फिर जाकर के ऊपर की प्रगति होती है तो जो आपकी ऊपर की प्रगति हो रही है यानी भौतिक प्रगति हो रही है आपकी आर्थिक प्रगति हो रही है आपकी स्वास्थ्य की प्रगति हो रही है आपकी सांसारिक प्रगति हो रही है यह प्रगति ऊपर की ओर है यह दिखेगी लोगों को आपको भी दिखेगी आपको भी महसूस होगी लेकिन यह तभी लोगों की होती है उनकी नीचे की जड़े भी उतनी मजबूत हुई रहती है नीचे की प्रगति उतनी हुई रहती है नीचे भी खूब प्रगति हुई रहती है तो उसी प्रकार देखो ना नीचे की प्रगति यानी वो बीज एक और ऊपर बढ़ता है लेकिन ऊपर क्यों बढ़ता है क्योंकि नीचे वो भूमि को

00:25:03 - 00:26:37

समर्पित होता है और नीचे और नीचे और नीचे उसका समर्पण भाव जितना नीचे नीचे नीचे जाता आते र उतना ही व ऊपर ऊपर बढ़ते रहता है यानी ऊपर बढ़ता है वो दिखता है नीचे समर्पित होता है वह नहीं दिखता ठीक उसी प्रकार से उसके प्रगति का राज है उसका प्रगति का राज है वो नीचे जितना समर्पित होता है उतना ऊपर उधमी होता है तो ध्यान में भी आवश्यकता है जितने आप समर्पित होंगे समर्पण भाव आपका जितना बढ़ेगा उतने आपकी आध्यात्मिक प्रगति होती है आध्यात्मिक प्रगति का रहस्य समर्पण है इसीलिए ध्यान को समर्पण ध्यान नाम दिया है तो आवश्यकता है जितनी प्रगति आपकी नीचे

00:25:50 - 00:28:13

होगी उतनी आपकी प्रगति होगी समर्पण करने का खूब अच्छा माध्यम यह अनुष्ठान था इस अनुष्ठान में 45 दिन तक अपने भीतर के दोषों पर अपनी बाहर की स्थितियों से विमुक्त होने का भीतर से दोषों से मुक्त होने का एक अच्छा अवसर हमारे आसपास था दूसरा एक ना कर्म का चक्र है उसी चक्र के तहत हमारा जन्म होता है और जो संगत मिली है जो सानिध्य मिला है उन संगत के अनुसार हमें विचार आते हैं और जैसे हमको विचार आते हैं ना वैसे ही हमारे हाथ से कर्म घटित होते हैं और जैसे कर्म घट होते हैं उन्हीं कर्मों को भोगने के लिए हम जन्म लेते

00:27:12 - 00:29:19

हैं जन्म लेते समय हम क्या करने वाले हैं इसका पूरा प्रोग्रामिंग करते हैं कौन से ऐसे मां-बाप हैं जिन मां-बाप के माध्यम से हमको वह शरीर प्राप्त होगा इसका भी निर्णय हम कर लेते हैं और वो करके फिर शरीर धारण करते हैं यानी मां-बाप बच्चे का चुनाव नहीं करते बच्चा मां बाप का चुनाव करता है कि जब ऐसे मां-बाप मिलेंगे जिनके माध्यम से मुझे ऐसा शरीर प्राप्त होगा जो शरीर से मैं मेरे कर्मों से मुक्त हो पाऊंगा ऐसे प्लानिंग करते हैं लेकिन कर्म से मुक्त होते समय गलती य हो जाती है फिर और दूसरे कर्म खड़े कर लेते हैं और बाद में उन कर्मों से मुक्त होने

00:28:16 - 00:29:52

के लिए फिर दूसरा जन्म लेते हैं यानी य जन्म का चक्र सदैव चलते ही रहता है इस हम देखते कि नहीं कोई बच्चा जन्म लेता है जन्म लेता है तो ज्योतिषी उसकी पत्रिका बनाते हैं पत्रिका बना कर के उसके ग्रह नक्षत्र का बताते हैं यह स्थिति है भविष्य में इसका यह होने वाला है य इसके भविष्य में हो सकता है यह कैसा है मु लगता है यह तो ब्लड टेस्ट तरीका है जैसे हम ब्लड टेस्ट करते कि नहीं तो ब्लड टेस्ट में आता है कि आपका विटामिन 12 कम है हीमोग्लोबिन कम है तो अगर आप उसके ऊपर काम करें उसकी दवाइयां ले उसका टॉनिक ले तो वह आपको बैलेंस कर

00:29:04 - 00:30:49

सकते हैं आप संतुलित कर सकते हैं ठीक उसी प्रकार से वह जन्म पत्रिका भी होता होगा कि जो पिछले जन्म में कर्म किए वह कर्मों के अनुसार व पत्रिका बनती है यानी उन ग्रहों को आप चुनते हैं जो पूर्व जन्म के आपके कर्म है ना उसके अनुसार तो वह जैसे ही ग्रह को चुनते हैं इफेक्ट को चुनते हैं लेकिन उसको दूर भी किया जा सकता है यानी प्रारब्ध को भी बदला जा सकता है या प्रारब्ध की चुबन आपको महसूस नहीं होगी यानी जब आप सामूहिक का में जाएंगे आप कलेक्टिविटी में जाएंगे तो उसका असर उसका प्रभाव आपके ऊपर नहीं पड़ेगा जैसे मैं उदाहरण ता हूं कि नहीं एक पानी

00:29:56 - 00:31:39

का गिलास है उस पानी के के ग्लास में एक चम्मच काली शही डाल दो तो एक चम्मच काली शही से पूरा ग्लास काला हो जाता है लेकिन वही एक चम्मच काली शय हम अगर गंगा नदी में जाकर डाले तो कहां चली गई पता ही नहीं चलेगा ठीक इसी प्रकार से अगर हम सामूहिक के साथ अपना जीवन जिए आत्मिक स्तर पर जिए तो उसका पता ही नहीं चलेगा वो सब कर्म हम भोग लेंगे लेकिन कब कर्म भोगे पता ही नहीं चलेगा सारी जमील का जड़ आपके अंदर का शरीर भाव है आपके अंदर का मैं का भाव है यानी मैं के भाव के कारण ही वह कर्म आपके साथ जुड़ते हैं अगर आपका मैं का भाव विहीन हो

00:30:47 - 00:32:36

गया तो आत्मा के साथ मैं कोई कर्म जुड़ते ही नहीं है एक तो क्या है आत्मा के साथ रह कर के आपके हाथ से बुरे कर्म होंगे ही नहीं एक दूसरा आत्मा के साथ करके साथ मैं रह कर के अच्छे कर्म होंगे वो कर्म आप मैं का भाव नहीं होने के कारण मैंने किया करके अपने साथ बांध नहीं तो आप सोचो ना बुरे कर्म होंगे नहीं अच्छे कर्म अपने साथ बांधो ग नहीं तो आपके साथ कोई कर्म ही खड़े नहीं होंगे और आपको आपके जीवन में कर्म मुक्त अवस्था प्राप्त हो जाएगी और कर्म मुक्त अवस्था प्राप्त होने के बाद मैं फिर आपका मृत्यु जब होने का है तो

00:31:44 - 00:33:34

होगा लेकिन कर्म मुक्त अवस्था को ही मोक्ष कहते हैं यानी सब मैं से मुक्त हो गए पिछले जन्मों कर्मों से मुक्त हो गए बुरे कर्मों से मुक्त हो गए कर्म से कोई कर्म ही बाकी नहीं अच्छा नहीं बुरा नहीं कुछ नहीं है एक शून्य की स्थिति आपके जीवन में आए थी कि जीने के लिए नया जन्म लेने के लिए आपके पास मैं कोई कर्म ही बाकी नहीं रहता तो इसी को मुक्त अवस्था कहते हैं सामूहिक और नियमितता य आध्यात्मिक क्षेत्र के प्रगति के दो मार्ग दो रास्ते हैं देखिए पहली बात तो आप देखो ना आपको भी आपके जीवन में जब भी अनुभूति प्राप्त हुई

00:32:47 - 00:34:27

है वह अनुभूति आपको सामूहिक में प्राप्त हुई जब आप सामूहिक में थे कनेक्टिविटी में थे तब प्राप्त हुई उसके बाद में जब आप सामूहिक का में थे कनेक्टिविटी में थे सेंटर पर थे तब जाकर प्रगति हुई है तो कहने का अर्थ एक तो सामूहिक अत्यंत आवश्यक है और दूसरा नियमितता आवश्यकता है आपके पासना में देख रहा हूं कई सालों से ध्यान कर रहे हैं लोग कई साधक सालों से ध्यान कर रहे हैं व सालों से ध्यान कर रहे हैं फिर भी ध्यान नहीं लगता ध्यान के अंदर विचार आते हैं सबसे बड़ी समस्या ध्यान में विचार आते हैं फिर ऐसा लगता है अरे मेरा ध्यान तो

00:33:36 - 00:35:38

लगता ही नहीं है और फिर ऐसी गिल्टी फीलिंग की भावना से ध्यान छूट जाता है इसी के लिए इस बार एक नया प्रयोग नई विधि का अभ्यास 45 दिन में है वही अभ्यास से इस बार आपको ध्यान कराने वाला हूं आप प्रयोग करके देखिए नियमितता अत्यंत आवश्यक है दूसरा ध्यान लगना चाहिए यह भी अपेक्षा है ना यह भी अपेक्षा अगर आप छोड़ दो ना कि ध्यान लगना चाहिए फिर तो कोई अपेक्षा ही नहीं ना आधा घंटा बैठना मैं कहता हूं ना आधा घंटा आप मुझे दान करो और जो चीज दान करते हैं उसको वापस नहीं मांगते ना तो उसी प्रकार से आधा घंटा अब कोई अपेक्षा से मत

00:34:39 - 00:36:35

करो ध्यान लगे यह भी अपेक्षा है वह भी मत करो और उसके बाद में आप करके देखो ना कोई अपेक्षा नहीं आधा घंटा बैठे लगे तो भी बैठे हैं नहीं लगे तो भी बैठे हैं तो कहने का अर्थ ऐसी बिना अपेक्षा से अगर आप ध्यान करोगे तो क्या होगा धीरे धीरे धीरे शरीर को ध्यान की आदत लग जाएगी धीरे धीरे धीरे विचारों को आपकी आदत लग जाएगी बुद्धि को आपको आदत लग जाएगी य एक आदत है यह आदत हमको शरीर को डालने की है और कोई भी नई आदत डालते हैं तो शरीर तो विरोध करता ही है ना क्योंकि शरीर को आदत ही नहीं है शरीर को आदत है या तो काम करना वो भी नहीं करने का श को आदत है

00:35:37 - 00:37:27

विचार करना वो भी नहीं करने का यानी विचार भी नहीं करने का और काम भी नहीं करने का ऐसी आदत डालने की कोशिश कर रहा हो तो शरीर विरोध करेगा ही ना तो जिस प्रकार से हम कोई नई आदत डालते हैं उसको समय लगता है ठीक ऐसे ही ध्यान की भी आदत डालो ना दूसरा ध्यान को शोक समझ के ग्रहण करो ना ध्यान से भी अपेक्षा मत करो यह मिल जाएगा वह मिल जाएगा आवश्यकता है नियमित ध्यान करने की और आवश्यकता है सेंटर पर जाकर ध्यान करने की कोरोना काल के पहले खूब अच्छे से सेंटर चलते थे उतनी सेंटर पर अभी संख्या नहीं रही और उसी के कारण मने जब ध्यान की आवश्यकता

00:36:33 - 00:38:11

बढ़ रही है तब ध्यान कम हो रहा है देखिए दुनिया भर में कितनी अशांति फैली कितने युद्ध हो रहे हैं इसके लिए उतने ही ध्यान के करने की आवश्यकता है ध्यान करने वाले लोगों की संख्या जैसे जैसे विश्व में बढ़ेगी वैसे वैसे विश्व में शांति आएगी विश्व की सामूहिक क्या कह रही है विश्व की कनेक्टिविटी क्या कह रही है उसका इफेक्ट उसका प्रभाव विश्व के ऊपर पड़ेगा ही अगर आप विश्व में शांति चाहते हैं अगर आप चाहते हैं कि विश्व का कल्याण हो तो आप जितने अधिक से अधिक ध्यान करने वाले लोगों की संख्या बढ़ेगी ध्यान की स्थिति बढ़ेगी वैसे वैसे विश्व



00:37:21 - 00:38:50

में शांति आएगी किस पक्ष के लोग हैं शांति के पक्ष में या अशांति के अब आपका सस करो ना आप आपका निरीक्षण करो तो सेंटर पर जाकर के ध्यान करना अत्यंत आवश्यक है यानी आप ध्यान को उतना महत्व दे रहे हैं वैसे घर पर आप ध्यान करते हो एक तो नियमितता नहीं रहती है दूसरा 30 मिनट ध्यान नहीं लगा तो उठ जाते हो ऐसा सेंटर पर उठोगे क्या नहीं नहीं दो क्या कहेंगे तुरंत आपका मैं वहां आइ आएगा कि जब तक लोग उठते नहीं आप नहीं उठ पाएंगे तो जबरदस्ती क्यों ना हो आपको सेंटर पर 30 मिनट ध्यान के लिए बैठना ही पड़ता है ऐसा कंपलसरी कोई घर पर बिठा है

00:38:06 - 00:40:11

क्या नहीं 10 मिनट बैठा ध्यान नहीं लगा उठ गए ऐसा नहीं इसलिए सेंटर पर जाओ नियम सेंटर पर जाओ सेंटर पर जाकर के सामूहिक में जाना जहां सामूहिक है वहीं परमात्मा है सामूहिक में हमारी उतनी हैसियत नहीं है हमारी वो स्थिति नहीं है कि हम अकेले ध्यान कर पाए होता है ना कई बार कई लोगों ने यह भी उदाहरण लिए कि गौतम बुद्ध के कोई गुरु नहीं थे महावीर स्वामी के कोई गुरु नहीं थे यानी कई महात्मा ऐसे होकर गए जिनके कोई गुरु नहीं थे तो कोई गुरु ना हो तो भी हमारा चल सकता है हमारी प्रगति हो सकती है लेकिन व साक्षात प्रकृति के साथ जुड़े हुए थे तो

00:39:09 - 00:40:50

उनको अलग से गुरु करने की आवश्यकता ही नहीं थी आपकी स्थिति ऐसी है क्या नहीं है आपकी स्थिति वैसी नहीं है तो आपको आवश्यकता है बाबा गाड़ी की आवश्यकता है गुरु की आपको आवश्यकता है कोई माध्यम की अब नेचर के साथ जुड़े हैं क्या कई आप देखो कई गुरुओं के अनुभव उन्होंने कोई उनके सामने कोई घटना घटित हो गई बस उतने से के अंदर ही उनका ध्यान लग गया यानी उनकी चित्त की दिशा एकदम पवित्र थी शुद्ध थी उतनी आज आपकी नहीं है इसलिए आपको आवश्यकता है गुरु की आपको आवश्यकता है सामूहिक की आपको आवश्यकता है कलेक्टिविटी की तो सेंटर पर जाना नियमित

00:39:59 - 00:41:18

चालू करो नियमित सेंटर पर जाओ भले हफ्ते में एक बार जाओ लेकिन जाओ हफ्ते में एक बार तो सेंटर पर जाना ही चाहिए तो उससे सामूहिक के साथ आपका संपर्क रहता है और उसके बाद में सामूहिक में ध्यान में एक होता है ना जैसे अपनी गाड़ी हम हर दफे सर्विसिंग को रखते हैं वो गाड़ी अच्छी चलती है उसी प्रकार से ये सेंटर मतलब सर्विसिंग सेंटर है अब हफ्ते में मैं एक बार जाते हो तो आपकी देह रूपी गाड़ी की सर्विसिंग हो जाती है और सर्विसिंग होने के बाद में फिर हफ्ते भर नियमित चलती है तो नियमित घर पर ध्यान करो और उसके बाद में एक हफ्ते में

00:40:38 - 00:42:29

तो भी रोज नहीं कर सके तो हफ्ते में सेंटर में जा कर के ध्यान करो ऐसा करोगे तो आपकी प्रगति होगी आपका प्रोग्रेस होगा दूसरा आ जीवन का एक और अनुभव आपके साथ शेयर करना चाहता हूं कि गुरु के साथ से जुड़ने का गुरु के सानिध्य में जुड़ने का गुरु के सूक्ष्म शरीर के साथ जुड़ने का खूब सरल मार्ग खूब आसान मार्ग गुरु के कार्य का प्रचार है गुरु कार्य का प्रचार एक आसान मार्ग है देखिए होता है ना ध्यान सबका लगता ही है ऐसा नहीं है ध्यान लगे ऐसी सबकी स्थिति रहती है ऐसा नहीं है ध्यान में विचार आ सकते हैं ध्यान में शरीर साथ नहीं दे सकता

00:41:59 - 00:44:08

है बुद्धि आड़े आ सकती है लेकिन प्रचार कार्य में तो यह सब कोई तकलीफें नहीं हैं एकचुअली प्रचार करना यानी क्या आप प्रचार के माध्यम से उस गुरु के सूक्ष्म शरीर के साथ जुड़ते हैं प्रचार किसका कर रहे हैं वो स्थूल शरीर का नहीं सदैव याद रखो आपको जो अनुभूति हुई है ना वोह अनुभूति भी सूक्ष्म शरीर के द्वारा हुई है तो आप प्रचार भी करोगे व सूक्ष्म शरीर का करोगे स्थूल शरीर का नहीं स्थूल शरीर तो आज है कल नहीं रहेगा लेकिन सूक्ष्म शरीर अगले 800 सालों तक रहने वाला है तो आप उस शा के साथ जुड़ रहे हो आप उस सूक्ष्म शरीर के साथ जुड़ रहे

00:43:03 - 00:44:59

हो जिसे आप प्रचार करते हो आपका चित्त किसी पुस्तक के ऊपर नहीं जाता आपका चित्त किसी निर्जीव चीज पर नहीं जाता आपका चित्त किसी मूर्ति के ऊपर नहीं जाता आपका चित्त किसी स्थान के ऊपर नहीं जाता जब भी आप देखो जब भी आप प्रचार करोगे तो आपका चित्त सूक्ष्म शरीर पर जाता है उस एनर्जी पर जाता है उस ऊर्जा पर जाता है यही कारण है कि जब आप प्रचार करते हो तो आपके माध्यम से वह ऊर्जा शक्ति बहने लग जाती है और जब बहने लग जाती है तो आपकी भी सफाई कर देती है आपके भी शरीर के दोषों को दूर करती है जैसे कई बार मैं उदाहरण नहीं देता हूं कि मैं एक ऐसा पाइप

00:44:04 - 00:45:23

था जिसके अंदर बहुत मेल था बहुत मिट्टी थी बहुत कीड़े थे दुनिया भर के कचरा इसके अंदर भरा हुआ था लेकिन मैंने क्या करा मेरे शक्तिशाली गुरु के पाइप के साथ उसको जोड़ दिया जोड़ दिया तो क्या हुआ जैसे प्रचार कार्य चालू किया तो पानी गुरु का इधर से घुसता था इधर से निकलता था अब निकलने वाला पानी नानी में बहे तो भी ये पानी पाइप स हो गया ये अगर कोई पिए तो भी ये सच हो गया यानी जब आप प्रचार कार्य करते हो तो आपको दोहरा लाभ है आपको कोई लेना देना नहीं है कि सामने वाला उसको ग्रहण कर रहा है नहीं ग्रहण कर रहा है वो ग्रहण करे तो भी ठीक है नहीं ग्रहण करे तो

00:44:44 - 00:46:11

भी ठीक है दोनों स्थिति में आपका चित्त तो सूक्ष्म शरीर पर रहा ना और जब आपका चित्त सूक्ष्म शरीर पर रहेगा तो ऑटोमेटिक ली आपका क्लीयरेंस आपकी सफाई तो हो ही जाएगी करना नहीं पड़ेगी यह सबसे आसान मार्ग आज आपको बता रहा हूं आप देखो ना मेरे को समाझ में आए 30 साल हो गए और 30 साल से प्रचार कार्य कर रहा हूं कंटीन्यू प्रचार कार्य कर रहा हूं आप देखो यह 45 दिन एक ब्रेक रहता है 45 दिन मुझे कुछ ग्रहण करने का मुझे कुछ प्राप्त करने का मुझे कुछ स्टोर करने का अवसर मिलता है एकांत मिलता है एकांत में गुरु के संपर्क में करने का अवसर मिलता है

00:45:30 - 00:47:25

अगर आप इसी को फॉलो करो आप भी नियमितता से 45 दिन का अनुष्ठान करो 45 दिन आप अपने भीतर ऊर्जा को स्टोर करो एकत्र करो एकत्र करने के बाद में बाकी 320 दिन उसको बांटो देखो क्या होता है जब आप प्रचार कार्य करते हो ना तो सूक्ष्म शरीर आपका चित्त रहता है लेकिन वह चित्त तभी उसके ऊपर रह पाएगा जब आपका चित्त शुद्ध हो आपका चित्त पवित्र हो और दूसरा 45 दिन आपने नियमित रूप से उस चित्त पर कार्य किया हो यह बहुत आवश्यक है चित्त को शुद्ध किया हो चित्त को पवित्र किया हो तो आपको नहीं 45 दिन के इफेक्ट दोनों तरफ मिलेंगे 45 दिन में भी

00:46:28 - 00:48:04

मिलेंगे अनुष्ठान में भी मिलेंगे उसके बाद में जब प्रचार कार्य करोगे तब भी मिलेंगे यह कुछ में किताबों की बातें नहीं कर रहा हूं यह मेरे जीवन में आए हुए अनुभव हैं और दूसरा जो पुराने साधक हैं उनको पूछो ना कि इस सब की शुरुआत प्रचार कार्य की शुरुआत कितने सामान्य तरीके से हुई थी कितने छोटे स्तर पर हुई थी कितने चले स्तर पर हुई थी कोई मेरे पास पेपर्स नहीं थे कागज नहीं थे सम्मान पत्र नहीं थे किताबें नहीं थी साहित्य कुछ भी नहीं था कुछ भी नहीं था एकदम खाली था और ऐसे खाली स्तर पर और दूसरा कोई पहचानने वाले भी नहीं थे कोई जानते भी नहीं थे हिमालय

00:47:20 - 00:48:53

से जब मुंबई में आया ना कोई भी नहीं जानता कोई पहचानता तक नहीं था उसके बा भी धीरे धीरे धीरे धीरे जैसे जैसे कार्य करता गया वैसे वैसे प्रगति होती गई प्रोग्रेस होती गई और दूसरा लाखों लोगों को य अनुभूति प्राप्त हुई है एक्ट इसकी संख्या कोई नहीं बता सकता कोई ट्रस्टी नहीं बता सकता कोई सेंटर नहीं बता सकता कोई देश नहीं बता सकता एक्ट कितने साधक हैं लाखों के अंदर साधकों की संख्या है साधकों की संख्या भी किसी को पता नहीं दूसरा कई देश ऐसे हैं जिन देशों में कोई साधक पता ही नहीं रहते जैसे मैं जाता हूं सब एकदम खड़े हो जाते हैं यानी वहां रहते

00:48:06 - 00:49:31

हैं लेकिन सोए हुए रहते उनको जगाने की उनको जगने की अत्यंत आवश्यकता है और दूसरा इसमें कुछ भी तो करने का नहीं है प्रचार कार्य करने का यानी क्या प्रचार कार्य से आप किसी भी माध्यम से जुड़ सकते हो जैसे सवेरे अभी तो बंद है लेकिन आएंगे वो इसके बाद में महाशिवरात्रि के बाद तो वो मैसेज को आप स्प्रेड करने का सबको एक तो मैसेज को पढ़ने का और दूसरा नाभी चक्र अभी भी जितना खुलना चाहिए ना साधकों का उतना खुला नहीं है कोई अच्छा आर्टिकल आता है कुछ अच्छा मैसेज आता है ना पढ़ के खुश हो जाते हैं बहुत अच्छा बहुत अच्छा उसके

00:48:49 - 00:50:09

बाद में उसको स्प्रेड नहीं करते उसको भेजते नहीं हैं अरे बाबा कोई संदेश आपको ज्यादा अच्छा लगा ना तो उसको दूसरों को बांटो ना बांटने के लिए नाभी चक्र विकसित होना चाहिए नाभी चक्र विकसित नहीं है ना तो उसके कारण जो भी अच्छा मिलता है अपने को लेकर बैठ जाते हैं अच्छा अच्छा या तो भेजेंगे ना तो अपने अपने रिश्तेदारों को भेजेंगे अपने अपने मित्रों माने सब जगह नहीं भेज पाते एकदम लिमिटेड लोगों के अंदर रहते हैं लेकिन ऐसा है क्या ऐसा र में भी हिमालय के ऋषि मुनियों को लेके वही बैठे रहते ऐसा नहीं क्या उसके बाद में यहां आने के बाद में फिर धीरे धीरे धीरे

00:49:30 - 00:50:49

प्रचार काने एकदम अगर कोई तटस्थ होकर देखे ना तो यह पूरे कार्य की प्रगति को तो सिर्फ प्रचार कार्य से सारी प्रगति हुई एकदम आज मैं मेरे जीवन का रहस्य बता रहा हूं आप भी उसको अपनाओ ध्यान नहीं करते आता मत करो प्रचार तो करो प्रचार करते करते करते ध्यान कब लग जाएगा तो आपको पता नहीं चलेगा तो कहने का अर्थ प्रचार कार्य भी एक बहुत अच्छा माध्यम है जिस माध्यम से आप प्रगति कर सकते हो आपकी प्रोग्रेस हो सकती है और दूसरा कितना अच्छा है ना ये एक ऐसा माल है जो आप बेचने जाओ बिका तो भी आपको फायदा है नहीं बिका तो भी आपको फायदा है जैसे होता

00:50:09 - 00:51:22

हैं ना आप कोई चीज बेचने के लिए जाओ आपको प्रॉफिट तब होगा जब वो बिकेगा हां इसके अंदर तो ऐसा है कि आप बेचने जाओ प्रॉफिट हुआ तो भी ठीक है बिका तो भी ठीक है नहीं बिका तो भी ठीक है दोनों स्थिति में आपका प्र क्यो क्योकि जिस प्रकार से एक स्वच्छ पानी पाइप में से गुजरता है तो पाइप को स्वच्छ करता ही है पाइप की गंदगी हटाता ही है पाइप के कीड़े दूर करता ही है बिल्कुल ठीक गही है जैसे ही आप प्रचार करते तो आपके अंदर से परम चैतन्य जाता है निकलता है जाता है निकलता है उसमें आपकी सफाई तो हो जाती आपके चक्रों की सफाई हो

00:50:46 - 00:52:15

जाती है आपके शरीर की सफाई हो जाती आपके अंदर प्रोग्रेस होना चालू हो जाती है अब करके तो देखो कुछ तो करो कुछ भी नहीं करते देख के बैठ जाते हो बैठ के नहीं होगा कोई भी मैसेज आया कोई भी संदेश आया उसको स्प्रेड करो ना और दूसरा आप कल्पना करो ना कि 10 लोगों को भी आप करो नियमित पकड़ो कि 10 लोग 10 लोगों को मैं नियमित करूंगा तो भी कितना सारा बढ़ सकता है और दूसरा यह एकदम निशुल्क है उसके लिए कुछ भी खर्चा करने का कुछ भी करने का कोई आवश्यकता नहीं है और दूसरा अभी खूब व्यवस्थित हो रहा है आगे प्रचारकों का टीम तैयार हो रहा है स मैंने

00:51:32 - 00:52:41

जो सिस्टमिक तरीके से अभी 30 साल नहीं हो पाया ना वो अभी सिमेटिक तरीके से हो रहे हैं प्रचारक तैयार हो रहे हैं मैनेजर्स तैयार हो रहे हैं माने सबके ट्रेनिंग चल रहे हैं और वो ट्रेनिंग के अंतर्गत ट्रेनिंग करके जब वो बाहर आएंगे तो सब व्यवस्थित रूप से चलाएंगे उनको पहले अनुभव होगा अभी अनुभव नहीं है तो आवश्यकता है आपको अगर इच्छा है प्रचारक होने की तो आप प्रचारकों के उस ट्रेनिंग में आओ ना उसको जॉइन करो ना जॉइन करने के बाद मैं पूरा आपको सारे एंगल से एक मेन मेरा कहना रहता है बाहर जाओगे ना किसी भी गुरु की निंदा

00:52:06 - 00:53:16

मत करो साधारण ता अपु जैसे जाते हैं ना तो कोई तो भी बताता है अरे यह गुरु तो ऐसे वो कोई उस गुरु को मानते रहता है ऐसा नहीं वो सिर्फ कुछ तो बोल लेगा तुमको तो बो बोलते रहता है उधर ध्यान मत दो किसी भी गुरु का नहीं अब जैसे मेरा ये था कि जब मैं मार्केटिंग में था ना मैं बोलता था मेरा माल सर्वश्रेष्ठ है बाकी माल की मुझे जानकारी नहीं है मुझे अब सबकी जानकारी होना कोई जरूरी थोड़ी है तो उसी हिसाब से कोई भी आपको अन्य पंथ का बोले तो उनको बोलो कि हमको जानकारी नहीं है बाकी हमको मालूम है हमारा अच्छा है तो उसी और वैसे

00:52:41 - 00:54:12

भी मैं ना मेरे इसमें संतुष्ट था तृप्त था तो मैंने कहीं पर भी कहीं जाने का टाइम ही नहीं मिला कहीं प और जो कुछ जाना है ना दूसरे इसके बारे में वो तो लोगों ने आके समझाया लोगों ने आके बताया तो बताया बाकी मेरे को को जाने की ना इच्छा थी ना जाता था कुछ भी नहीं था दूसरा मैंने आपको जो बताया कि एक ध्यान की विधि य मैंने ना आपका 45 दिन मैं आपका खूब निरीक्षण पास से करते रहता हूँ सूक्ष्म शरी के माध्यम से आपका निरीक्षण एकदम पास से होता है तो इसमें क्या महसूस हुआ ध्यान न करने के कारण क्या है देखिए जिन्होंने भी ध्यान सिखाया ना वह सबका एक

00:53:29 - 00:55:07

व रहेगा नहीं ध्यान बहुत अच्छा है एक दूसरा मने उनको विरोध नहीं है किसी को भी क्योंकि इसमें विरोध करने कुछ है ही नहीं एक दूसरा उनको सिर्फ क्या लगता है मेरा ध्यान लगता नहीं है मेन 90 पर साधकों का कंप्लेंट क्या होगा ध्यान लगता ध्यान क्यों नहीं कर पाते ध्यान लगता नहीं है इसके दो कारण है एक तो अपेक्षा लेकर इस मार्ग में मत आओ मैं बार-बार बोलते रहता हूं अपेक्षा लेकर के इस मार्ग में मत आओ आप अपेक्षा लेकर के आते हो यह काम होना चाहिए वह काम होना चाहिए वह काम होना चाहिए दूसरा जो काम देकर आए हो वह काम तो हो जाते हैं और काम के बाद

00:54:21 - 00:55:46

मैं ध्यान छूट जाता है तो वैसे प्रकार है कि कोई अपेक्षा लि की मत आओना तो एक तो क्या होगा आप स्थाई रूप से कर पाओगे दूसरा ध्यान को शोक बनाओ ना ध्यान को शोक बनाओ कि ध्यान करना मुझे अच्छा लगता नहीं क्या हो रहा है मेरे को तो सब दिख रहा है जिनका प्रगति हुआ है जिनको प्रोग्रेस हुआ है जिनको कर्म मुक्त अवस्था प्राप्त हो गई है जब उनका देखता हू ना वो कैसे पछ इस अवस्था तक तो वो इस मार्ग में कोई अपेक्षा लेकर आए ही नहीं थे वो बुद्धि आदी लोग थे उन्होंने सोचा कि ध्यान करके अच्छा लग रहा है इसलिए ध्यान कर रहे बाकी कोई अपेक्षा

00:55:06 - 00:56:44

नहीं थी कि कुछ मिलना चाहिए कुछ कुछ भी नहीं थी उसके बाद मैं उनको आज सब कुछ प्राप्त हो गए कर्म मुक्त अवस्था प्राप्त हो गई क्यों क्योंकि कोई अपेक्षा से आए नहीं थे तो पहली बात तो इस मार्ग में कोई अपेक्षा लेकर के मत आओ और दूसरा विचार आते हैं इसलिए ध्यान एक्युअली यह तुम्हारा क्षेत्र नहीं है ना मैं जो कहता हूं ना इतने आसान आसान आइडिया आपको बता है आप करते ही नहीं ना मैं आपको बोता हूं 30 मिनट आप मुझे दान करो आपके जीवन के 30 मिनट आप मुझे दान करो दूसरा जो चीज दान करते वह वापस नहीं मांगते ना तब केवल 30 मिनट दान करो दान

00:55:54 - 00:57:12

करने के बाद मैं फिर ध्यान ना लगे यह क्षेत्र ही आपका नहीं है और अगर आप 10 मिनट में उठते हो इसका मतलब जो दान दिया वो वापस लेते हो आपने जब 30 मिनट दान किए तो 30 मिनट में आपका कोई हक ही नहीं है ना जब आपका कोई हक ही नहीं है फिर आप कैसे उठ सकते हो 30 मिनट आप उठ ही नहीं सकते 30 मिनट आपके है ही नहीं अगर ऐसा मानते हो कि 30 मिनट मेरे है ही नहीं य 30 मिनट यही सेवा है गुरु सेवा गुरु सेवा बोलते हो ना गुरु कार्य ये सबसे बड़ा गुरु कार्य 30 मिनट गुरु को जो दान दिए वो 30 मिनट वहां बैठे हैं 30 मिनट वहां से हिलने का ही

00:56:35 - 00:57:54

नहीं ऐसे ही करके देखो ना करके तो देखो और दूसरा विचार आते मतलब क्या अपेक्षा लेकर बैठोगे एक दूसरा पास्ट लाइफ की फाइल अपनी डाउनलोड करके रखोगे तो आएंगे ही ना वह सब छोड़ दो और दूसरा 30 मिनट आपके है ही नहीं य ये सोच के बैठो तो ऑटोमेटिक क्या होगा वो 30 मिनट में आप जबरदस्ती बैठे रहोगे चाहे ध्यान लगे ये आपका क्षेत्र नहीं है आप ना आपके क्षेत्र के बाहर जाकर कार्य करते हो अब देखो जैसे मैं मैं मेरी तरफ से जितना बताने का उतना बता देता हूं उसके बाद मैं करो मत करो मेरा क्षेत्र नहीं है आप ध्यान करते हो नहीं करते हो यह मेरा

00:57:16 - 00:59:03

क्षेत्र नहीं है वैसे अपने क्षेत्र में काम करो ना आपका क्षेत्र है 30 मिनट ध्यान करने बैठना 30 मिनट ध्यान लगे नहीं लगे आपका क्षेत्र नहीं है ना ध्यान नहीं लगता यह बोलना दूसरे क्षेत्र में गए ध्यान लगाना नहीं आप सिर्फ 30 मिनट बैठे हो सबसे बड़ा गुरु का 30 मिनट ध्यान करने बैठना ऐसा बैठ के तो देखो बैठ के देखो आप तो भी आपको अनुभव आएगा धीरे धीरे धीरे ध्यान लगना चालू हो जाएगा नियमित करो ना एक दूसरा अपेक्षा से मत करो और दूसरा विचार आते हैं मतलब क्या वो जो विचार आते हैं ना उसी के लिए आज एक विधि का आपको समाचार दे रहा

00:58:09 - 01:00:01

हूं उस विधि को आपको समझा रहा हूं यह विधि का प्रयोग अभी मैंने 45 दिन में अनुष्ठान के दौरान किया है और 45 दिन अनुष्ठान पर दौरान यह करके इसको सिद्ध किया है सिद्ध किया है यानी इससे अगर आप करके देखोगे एक तो आपको भी उसका लाभ मिलेगा पहली बात तो प्राचीन समय में किसी भी बड़े बुजुर्ग की या ई देवता की नमस्कार करने का एक ही तरीका था साष्टांग नमस्कार डालते थे साष्टांग नमस्कार यानी पूर्ण जमीन प लेट जाते थे और यह हाथों को पूरा इस प्रकार से रखते जैसे कोई तीर रखा हो ऐसा और उसके बाद में फिर धीरे धीरे धीरे धीरे आप हाथ को खोलो और हाथ को खोल के बाद में

00:59:06 - 01:00:38

फिर ध्यान करो फिर मेडिटेशन करो दूसरा आज तो आपको पॉसिबल नहीं होगा क्योंकि जगह की कमी होगी आप जहां बैठे हो वहां नहीं कर सकते हो लेकिन आज सीख लो क्या ध्यान है सीख लो सीखने के बाद में कल से जा करर के इस पर अभ्यास य करना कल जब घर पर करोगे ना तो इसको घर पर पूरा साष्टांग दंडवत डालो और आपके दोनों पैर या ऐसे पैर के तलवे दोनों आकाश की ओर होने चाहिए एक दूसरा आपके दोनों हाथ तीर जैसे जितना जितना लंबा स्ट्रेच कर सकते हो उतना स्ट्रेच करो और स्ट्रेच करने के बाद में क्या होगा आपके दोनों हाथ ऐसे रहेंगे और बाद में फिर धीरे धीरे ऐसे खोलो और खोलने

00:59:53 - 01:01:32

के बाद में फिर ध्यान करने बैठो ध्यान करने बैठोगे मतलब नमस्कार की मुद्रा में बैठने का आज नहीं संभव है क्योंकि आज जगह नहीं हुई आपको आज तो जैसे नॉर्मल बैठते ऐसे बैठो लेकिन कल से यह प्रयोग करके देखो ना कि उसके बाद आप देखो प्रत्येक चक्रों के ऊपर आपको स्पंदन महसूस होगा और उसके बाद में धीरे धीरे आप देखोगे एक एक चक्र पर स्पंदन बढ़ते जाएगा बढ़ते जाएगा बढ़ते जाएगा बढ़ते जाएगा और अंत में जाके सहस्र चक्र में जाके पर आप कल्पना करो ना कि साक्षात् सूक्ष्म शरीर आपके सामने विद्यमान है आप सूक्ष्म शरीर के सामने ध्यान कर रहे

01:00:42 - 01:02:49

हो मेडिटेशन कर रहे हो ऐसा भाव लाओ और सूक्ष्म शरीर से निकलने वाला चैतन्य सूक्ष्म शरीर से निकलने वाले वाइब्रेशंस आपके पूर्ण शरीर पर महसूस हो रहे हैं इस प्रकार से अगर भाव लाते हैं आज आप बैठ के करो लेकिन कल से इसको नमस्कार की मुद्रा में करने का है पूर्ण साष्टांग दंडवत डालने का और सूक्ष्म शरीर मेरे सामने बैठा है ऐसा भाव रखने का और उसके चरणों को पास आप नमस्कार कर रहे हो और धीरे धीरे धीरे हाथ खुले करके उसके चैतन्य को ग्रहण कर रहे हैं ऐसा भाव करने का भाव करने के बाद में फिर आप मंत्र का उच्चारण करेंगे मैं एक पवित्र आत्मा

हूं मैं एक शुद्ध आत्मा हूं मैं एक पवित्र आत्मा हूं मैं एक शुद्ध आत्मा हूं मैं एक पवित्र आत्मा हूं मैं एक शुद्ध आत्मा हूं  
अब आप धीरे-धीरे आपने साष्टांग नमस्कार किया हुआ है आपके पैरों के दोनों अंगूठे चिपके हुए हैं आपके पैर के  
दोनों तलवे आकाश की ओर हैं वह भी चिपके हुए हैं उसके ऊपर सूक्ष्म शरीर से प्राप्त चैतन्य अनुभव हो रहा है दोनों  
तल पैर के ऊपर क्लाक वाइज चैतन्य के चक्र चल रहे हैं इसके बाद में धीरे-धीरे चैतन्य आपके एडी में महसूस हो  
रहा है चैतन्य धीरे-धीरे आपके पियों में महसूस हो रहा है व चैतन्य धीरे-धीरे आपके घुटने के बैक

साइड में महसूस हो रहा है वही चैतन्य आपके दोनों पैरों के जांग में महसूस हो रहा है चैतन्य का एक तेज प्रभाव निरंतर आपके ऊपर बना हुआ है व चैतन्य धीरे धीरे आपके मूलाधार चक्र पे महसूस हो रहा है वहां पर भी क्लॉक वाइज गोल गोल गोल गोल गोल गोल घूम रहा है फिर थोड़ा ऊपर आके आपके स्वाधिष्ठान चक्र पर फिर घूम र है गोल गोल गोल गोल गोल गोल घूम रहा है फिर धीरे धीरे आपके नाभी चक्र पे वो घूम र है गोल गोल गोल गोल गोल गोल घूम रहा है धीरे-धीरे आपके हृदय चक्र पर महसूस हो रहा है फिर घूम रहा है वो गोल गोल गोल गोल गोल गोल भूत

फिर धीरे धीरे व वि शुद्धि चक्र के ऊपर जा रहा है वि शुद्धि चक्र में भी घूम रहा है गोल गोल गोल गोल गोल गोल अब धीरे-धीरे आपके आज्ञा चक्र प महसूस हो रहा है आज्ञा चक्र पर भी घूम रहा है गोल गोल गोल गोल गोल गोल धीरे-धीरे व सहस्र चक्र तक पहुंच रहा है वहां पर सहस्र चक्र प गोल गोल गोल गोल गोल गोल घूम रहा है और आप महसूस करें कि आपका शरीर का प्रत्येक अंग पृथ्वी तत्व के साथ जुड़ा है आपके पंजे पृथ्वी के साथ जुड़े हैं आपके घटने पृथ्वी के साथ जुड़े हैं आपकी जांघ पृथ्वी के साथ जुड़ी है आपका पेट पृथ्वी के साथ जुड़ा है आपकी

छाती पृथ्वी के साथ जुड़ी है आपका माथा पृथ्वी के साथ जुड़ा है और पृथ्वी आपके सब विचारों को खींच रही है शोषित कर रही है सब बीमारी को खींच रही है शोषित कर रही है सारे तनाव को खींच रही है और आप एकदम रिलैक्स महसूस कर रहे हैं एकदम हल्के महसूस कर रहे हैं एकदम हल्के महसूस कर रहे हैं अब आपके दोनों तल हाथों पर चक्र क्लॉक वाइज घूम रहे और आपको एक समाधि की अवस्था प्राप्त हो गई प अब धीरे धीरे आप उठके बैठिए और अपने दोनों हाथों से जो चैतन्य प्राप्त किया थाको ऐसे अपने दोनों आंखों पर अपने सहस पर करके नमस्कार कीजिए स शरीर का आभार

मानिए उसने आज हमें इस चैतन्य की अनुभूति कराई [संगीत] [प्रशंसा] [संगीत] नमस्कार m